मन्नू भंडारी के उपन्यासों में बाल मनोविज्ञान

ममता मग्गो
असिसटैन्ट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, राजकीय महाविद्यालय, छछरौली, जगाधरी

'मनोविज्ञान' मन का विज्ञान है, वेद–मन्त्रों में मन की व्याख्या, करते हुए बताया है कि मानव मन जागृत एवं स्वप्न दोनों ही अवस्थाओं में गतिमान रहता है। मनोविज्ञान का अंग्रेजी पर्यायवाची शब्द 'साइकॉलॉजी' है, जो यूनानी भाषा के 'साइके' और 'लोगस' से मिलकर बना है। 'साइके' का अर्थ है 'आत्मा' और 'लोगस' का अर्थ है 'विचार–विमर्ष।' इन दोनों शब्दों से साइकॉलॉजी शब्द बना है। अतएव 'साइकॉलॉजी' वह विज्ञान है जिसमें मनुष्य की आत्मा के विषय में चर्चा है।''[1] मनोविज्ञान–शास्त्र भारत के लिए नया विषय नहीं है। हमारे पूर्वजों ने इस विषय पर पहले से ही विचार किया है, वे मानसषास्त्र को 'जीवन का तत्वज्ञान' कहते थे। इस तत्त्वज्ञान में मन सम्बन्धी अर्थात् चेतन–मन और अति चेतन (Super Conscious) मन का अध्ययन किया है।''[2]

मन का अध्ययन करने वाले इस मनोविज्ञान ने अल्पावधि में राजनीति, विज्ञान, उद्योग–धन्धे, समाज–व्यवस्था, धर्म, षिक्षा आदि जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में पदार्पण कर अपनी धाक जमा ली। फलस्वरूप जीवन के विविध क्षेत्रों से सम्बन्धित प्रष्नों एवं समस्याओं के मनोवैज्ञानिक पहलुओं पर जब तक विचार न किया जाये तब तक विद्वानों के चिन्तन को अधूरा एवं निष्कर्ष को दोषपूर्ण माना जायेगा। अतः सम्यक् यथार्थ एवं सम्यक निष्कर्ष–निर्धारण के लिए मनोविज्ञान की सहायता लेना आवष्यक है। मनोवैज्ञानिक अनुप्रयोगों द्वारा यह सिद्ध किया गया है कि मानवीय मन में ही युद्ध, अपराध, रोग आदि की मूल जड़ें होती हैं। फ्रायड से पूर्व मनोविज्ञान को चेतना का विज्ञान कहा जाता था। फ्रायड ने मानसिक रोगियों के अनेक अतार्किक तथा समय–स्थान की दृष्टि से असंगत कथनों के विष्लेषण के आधार पर पाया कि इनका आधार चेतन–मन नहीं है। 'कार्य कारण सिद्धान्त' के अनुसार चेतन के अतिरिक्ति अन्य कोई स्तर अवष्य है, जो इन कथनों का स्रोत है। इस आधार पर उसने मानसिक क्रियाओं के तीन स्तरों– (i) चेतन (कांषस), (ii) अवचेतन (फोर कांषस), तथा (iii) अचेतन (अनकांषस), पर सम्पादित होने की अवधारणा प्रस्तुत की और इन्हें मन का स्थल रूपरेखीय पहलू कहा है।''[3]

मनुष्य की उत्पत्ति से ही समाज मनोविज्ञान की उत्पत्ति कही जा सकती है, क्योंकि 'समाज मनोविज्ञान' शब्दों से ही यह विदित होता है कि जहाँ समाज तथा मनोविज्ञान की उत्पत्ति हुई वहीं समाज मनोविज्ञान की भी। मनुष्य की उत्पत्ति के साथ ही मनोविज्ञान प्रारम्भ होता है, क्योंकि मनुष्य के 'मन' होता

है और उसका अध्ययन करने वाले विज्ञान का आधार तभी प्रारम्भ हो जाता है, जबकि मन का। मन का अर्थ आज हम मन–शारीरिक क्रियाओं या व्यवहार से मानते हैं न कि कोई अमूर्त पदार्थ से। मनुष्य को पूर्ण रूप से समझने के लिए उसके आन्तरिक भावों, हृदय के विभिन्न विकारों तथा संघर्षों या द्वन्द्वों को जानना अत्यन्त आवष्यक है। मानव की बाहरी चेष्टाओं से अधिक महत्त्व उसके अन्तर्निहित सत्यों का उद्घाटन तथा उसकी मानसिक ग्रन्थियों को खोलकर दिखाना है।

मनुष्य उत्पत्ति से ही सामाजिक प्राणी रहा है तथा वह जिस समूह में पैदा हुआ उससे पृथक नहीं रह सकता था, क्योंकि वह समूह ही उसकी सभी आवष्यकताओं की पूर्ति करने में सक्षम था, जैसे खाना, पीना, सुरक्षा, लिंग, प्रेम आदि। इस प्रकार मनुष्य समाज का प्रादुर्भाव भी मनुष्य की उत्पत्ति के साथ हुआ।''[4] अर्थात् मनुष्य का सम्बन्ध परिवार से है और परिवार का सम्बन्ध मनोविज्ञान से भी जुड़ा है। मनोविज्ञान से तात्पर्य मानव के व्यवहार से है। मानव के सद्व्यवहार एवं दुर्व्यवहार से ही उसके जीवन में समस्याएं उत्पन्न होती हैं।

आधुनिक युग में उपन्यासकार ने साहित्य के माध्यम से व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक अध्ययन को भी चित्रित किया है। आज का उपन्यासकार व्यक्ति के बाह्य वातावरण की अपेक्षा उनके अन्तर्मन की वृत्ति प्रेरक शक्ति एवं मस्तिष्क के सूक्ष्मातिसूक्ष्म तत्त्वों से प्रेरणा लेकर अपनी रचना का नाम अधिक कर रहा है, जिसके कारण आधुनिक कथा –साहित्य मनोविश्लेषण की ओर अधिक उन्मुख हो रहा है। आज उपन्यासों में बाल –मनोविज्ञान से लेकर नारी–पुरुष मनोविज्ञान पर भी अधिक अध्ययन किया जा चुका है।

समाज की इस नई स्थिति को केन्द्र में रखकर उसमें आधुनिकताबोध, जीवन मूल्यों में आये परिवर्तन एवं समसामयिक गतिविधियों का चित्रण आदि मन्नू भंडारी के उपन्यास 'आपका बंटी' में किया गया है। मन्नू भंडारी ने एक नारी होते हुए भी पुरुष–नारी के अन्तर्मन को अति सूक्ष्म रूप से परखा है। इन्होंने नारी पुरुष के दाम्पत्य सम्बन्धों के अतिरिक्त बाल–मनोविज्ञान का विस्तृत रूप से अध्ययन किया है।

मन्नू भंडारी के कथा–साहित्य की सबसे बड़ी विषेषता यह है कि उन्होंने इसमें व्यक्ति–विषेष की मनः स्थिति को लेकर उसका मनोवैज्ञानिक विष्लेषण प्रस्तुत किया है।

'आपका बंटी' मन्नू भण्डारी का एक ऐसा उपन्यास है जिसकी कथा पूर्णरूप से मौलिक एवं संगठित है। इसकी सम्पूर्ण कथा–वस्तु एक सूत्र में बंधी हुई है। इसमें आदि से अन्त तक कुतुहल बना रहता है। इस उपन्यास का कथानक आधुनिक जीवन के अति यथार्थ को प्रस्तुत करता है। घटनाओं की अन्विति के कारण कहीं पर भी षिथिलता देखने को नहीं मिलती।

बंटी प्रस्तुत उपन्यास का प्राण तत्त्व है। वह प्रमुख पात्र होने के साथ ही उपन्यास की प्रमुख समस्या भी है, जो सामाजिक और मानसिक यन्त्रणाओं से भरे आज के इस समाज में अनेक टूटते परिवारों

में विद्यमान है। सम्पूर्ण उपन्यास में मनोवैज्ञानिक चिन्तन एवं अन्तर्द्वन्द्व के चित्रण को ही प्रस्तुत किया गया है। इसी कारण इसका कथा–साहित्य अधिक विस्तृत नहीं है।

बंटी का नाम अरूपबत्रा है, किंतु पूरे उपन्यास में बंटी के नाम से ही वह व्याप्त है। नौ साल का बंटी चौथी कक्षा का छात्र है। बंटी के माता–पिता अर्थात् शकुन और अजय का प्रेम–विवाह हुआ था किन्तु जीवन की निरसता से खिन्न होकर दोनों अलग हो जाते हैं। बंटी अपनी माँ के साथ रहता है और अपनी माँ के प्रेम का एक मात्र अधिकारी है। शकुन घर में माँ है– त्याग, सेवा एवं स्नेह की देवी, किन्तु कॉलेज में प्रिंसिपल है– कर्त्तव्य एवं नौकरी के प्रति समर्पित निष्ठा की प्रतिमूर्ति। इसी कारण बंटी को अपनी माँ में सदैव दुहरा व्यक्तित्व आभासित होता है। वह सोचता है– ''मम्मी के पास जरूर एक और चेहरा है। चेहरा ही नहीं आवाज़ भी कैसी सख्त होती जाती है। बोलती हैं तो लगता है जैसे डांट रही हों।''[5]

बंटी के पापा अजय कभी–कभी चार–छह महीने में कलकत्ता से उसे मिलने आते हैं तो सरकिट हाउस में ठहरते हैं और वहीं उसको मिलने के लिए बुलाते हैं। बंटी सारा दिन अपने पापा के पास रहता है, यत्र–तत्र घूमने जाता है, तरह–तरह के खिलौने खरीदकर और अपनी पसंद के व्यंजन खाकर रात में माँ के पास लौट आता है। शकुन बंटी के सारे दिन में पापा से हुई सम्पूर्ण बातों का ब्यौरा सुनकर अपने नीरस और अभावग्रस्त जीवन के तनावों से मुक्ति के समाधान खोजने का प्रयत्न करती है। शकुन और अजय की तलाक से सम्बद्ध कार्यवाही के सम्पादन में अजय के समीपस्थ एवं कलकत्ता में ही वकालत कर रहे वकील चाचा मध्यस्थता कर रहे हैं। वकील चाचा जब भी कलकत्ता से आते हैं तब बंटी के लिए अजय द्वारा भेजे गये विभिन्न प्रकार के खिलौने आदि लाते हैं। अतः बंटी के लिए वकील चाचा शकुन को परामर्ष देते हैं कि बंटी के व्यक्तित्व के समुचित विकास के लिए उसे होस्टल में रखे अन्यथा उसे सदैव छाती से चिपकाये रखने का दुष्परिणाम यह होगा कि लड़कियों जैसी आदतों के साथ बड़ा होता हुआ बंटी भविष्य में आत्मनिर्भर नहीं बनेगा। वकील चाचा कहते हैं– ''ही शुड ग्रो लाइक बॉय, लाइक ए मैन।''[6]

शकुन के घर की व्यवस्था उसकी सेविका फूफी संभालती है। फूफी बंटी से बहुत प्रेम करती है। बंटी की प्रत्येक सुख–सुविधा का ध्यान भी वही रखती है। बंटी

फूफी से कहानियाँ सुनता है और फिर काल्पनिक लोक में विचरण करता है। अजय से वैवाहिक बन्धन से मुक्त हो जाने के बाद शकुन का परिचय डॉ0जोषी से होता है। एक बार बंटी के अत्यंत अस्वस्थ हो जाने पर डॉ0 जोषी द्वारा बंटी की चिकित्सा इतनी अच्छी तरह की गई कि शकुन उसकी तरफ आकर्षित हो गई।

डॉ0 जोषी नगर के षीर्षस्थ डॉक्टर हैं और विधुर हैं। उनके दो बच्चे भी हैं। डॉ0 जोषी के प्रस्ताव को स्वीकार कर शकुन उनके साथ शादी के बंधन में बंध जाती है। विवाहोपरान्त शकुन कॉलेज का आवास छोड़कर डॉ0 जोषी के घर रहने जाती है। वहीं से बंटी के आत्मसंघर्ष का प्रारंभ होता है। बंटी ने अपने पुराने घर में जो वाटिका बनाई थी वह छूट जाती है। फूफी भी हरिद्वार चली जाती है।

डॉ0 जोषी के घर में शकुन और बंटी का भव्य स्वागत होता है, फिर भी बंटी स्वयं को उपेक्षित महसूस करता है। इस घर में बंटी का समय काटे नहीं कटता। डॉ0 जोषी के बच्चों में जोत बंटी को अच्छी लगती है, किन्तु अमी उसे ज़रा भी पसंद नहीं। वह बहुत शैतान है। कई बार उसकी बंटी से मारपीट हुई। जोत, अमी और मम्मी कार से स्कूल जाते हैं, किंतु बंटी बस से ही आता–जाता है। बंटी का एकाकीपन इतना बढ़ जाता है कि उसने अपने पापा को कई अधूरे खत लिख डाले। बंटी का जीवन धीरे–धीरे कुंठाग्रस्त होने के कारण उसका स्वभाव भी चिड़चिड़ा होने लगा है। परिणाम स्वरूप आए दिन कोई न कोई समस्या उत्पन्न होती रहती है। डॉ0 जोषी उसे सहज बनाने हेतु लोंग ड्राइव पर ले जाने का प्रोमिस करते हैं किंतु समय पर आ नहीं सकते। अतः बंटी अन्य मनस्क हो जाता है। अब स्कूल की पढ़ाई में बंटी का मन नहीं लगता, गणित, इतिहास, भूगोल सब कुछ मिलकर जैसे गड्ड–मड्ड हो गया है। उसने गुस्से में आकर रंग की शीषियाँ भी तोड़ डाली हैं, अतः ड्राईंग भी नहीं बना पाता। बंटी महसूस करता है कि अब तो उसकी मम्मी पर से भी उसका अधिकार जाता रहा, क्योंकि वह डॉ० जोषी के साथ ही अधिक रहती है। बंटी को डॉ0 जोषी उसके और मम्मी के प्रेम के बीच बाधक लगते हैं। अतः न तो वह उन्हें पापा के रूप में स्वीकार करता है, न ही महत्त्व दे पाता है।

आखिरकार बंटी अपने पापा अजय के पास कलकत्ता जाने की जिद्द करता है और शकुन भी समझती है कि इतने तनाव में रहने से अच्छा है कि बंटी उसके पापा के साथ ही रहे। अजय बंटी को लेने आता है। बंटी अपनी माँ को अत्यंत चाहता है, किन्तु वह चाहता है कि उसकी माँ उसे मनुहार करे, रोक ले, किंतु ऐसा नहीं होता। अपने इस मान के कारण ही मम्मी द्वारा दिये गये उपहारों और खिलौनों को वह नहीं ले जाता, माँ को पत्र लिखने से भी मना कर देता है।

कलकत्ता पहुँचने पर बंटी का परिचय अजय की पत्नी, अपनी नई माँ व उसके षिषु चीनू से होता है। कलकत्ता में स्कूल की प्रवेष परीक्षा में अनुर्त्तीण हो जाने पर उसके पापा उसे अन्यत्र स्कूल में प्रवेष दिलाकर हॉस्टल में रखने का निर्णय लेते हैं। बंटी को न चाहते हुए भी पापा की इस इच्छा के समक्ष समर्पण करना पड़ता है।

सम्पूर्ण उपन्यास की कथा–वस्तु का सृजन बंटी को केन्द्र में रखकर किया गया है। समग्र कथानक का प्रधान कर्त्ता एवं भोक्ता बंटी ही है। बंटी मात्र 9 वर्ष का बालक है। बाल मनोविज्ञान के आधार पर ही लेखिका ने बंटी के सारे कार्य–कलापों का बखूबी चित्रण किया है। अपनी उम्र के हिसाब से बंटी काफी चिन्तनषील है। उपन्यास के समग्र कथा तन्तुओं का विकास बंटी के ईद–गिर्द ही होता है। विदुषी लेखिका ने बंटी के चरित्र का विकास आत्मचिन्तन जनित विचारों के आलोक में ही कराया है। बंटी के चरित्र का सूक्ष्मातिसूक्ष्म अध्ययन किया गया है। मम्मी–पापा के बीच होने जा रहे तलाक से उत्पन्न तनावों के विषय में वह कुछ नहीं जानता। मम्मी का सहज प्रेम उसे प्राप्त है। उसकी माँ उसे ऐसे राजकुमारों की कहानियाँ

सुनाती है जो अपनी माँ से बहुत प्रेम करते हैं। और वह भी अपनी माँ से कहता है – 'धत्!' मम्मी को कभी नहीं छोड़ूंगा।'[7] बंटी जब पापा से मिलने जाता है तो मन ही मन अपनी पसन्द की चीजों की सूची तैयार करता है। उसे अपने मित्र टीटू से यह सूचना प्राप्त होती है कि उसके मम्मी और पापा के बीच तलाक होने जा रहा है। तलाक का अर्थ लड़ाई होता है वह बात उसे टीटू से ही पता चलती है। बंटी का बालमन मम्मी और पापा के बीच दोस्ती करा देने की सह–कल्पना करता है। अजय उसे कलकत्ता चलने के लिए कहता है तब भी वह कहता है – ''मम्मी चलेगी तो चलूँगा।'' बंटी जब सरकिट हाउस से लौटता है तब भी मम्मी को रोया हुआ समझकर उसके मन में अपराध की भावना उत्पन्न होती

है। बंटी को माता–पिता दोनों का प्रेम तो मिलता है पर दोनों साथ नहीं रहे इसलिए बंटी का जीवन एकांकी है। बंटी के शौक है– ताष खेलना, लूडो और कैरम खेलना, पेन्टिग करना आदि। उसके पापा उसे लड़कियों के खेल कहते हैं और उसे क्रिकेट, हॉकी, कबड्डी आदि खेलने हेतु व पेड़ पर चढ़ने, तैरने एवं साइकिल चलाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं एकाकी की भावना पनप रही है। फूफी तथा मम्मी से स्वप्नलोक की कहानियाँ सुनने के कारण वह कल्पनालोक में विचरण करता रहता है।

अपनी उम्र में बंटी कुछ आगे है। पापा–मम्मी के तलाक ने उसे समय से पहले ही समझदार बना दिया है। वह ऐसा कोई काम करना नहीं चाहता जिससे मम्मी को दुःख पहुँचे इसी कारण वह दीवार पर लगी हुई पापा की एक मात्र तस्वीर को भी उतार कर अलमारी में बन्द कर देता है और यह जताता है कि पापा को याद करना भी अब उसे अच्छा नहीं लगता।

बंटी अपनी मम्मी से इतना जुड़ा हुआ है कि वह पापा को भूलने के लिए तो तैयार है किन्तु कोई और व्यक्ति उसके पापा बनकर आए यह उसे स्वीकार नहीं है। इसी कारण मम्मी के जीवन में डॉ0 जोषी के प्रवेष को वह स्वीकार नहीं कर पाता। डॉ0 जोषी उसे बाधक के रूप में नज़र आते हैं। सारे उपन्यास में बंटी के मन में जोत के प्रति स्थित प्रेम का स्फूरण लक्षित होता है। बंटी को अमि बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता है। मम्मी के प्रेम पर बंटी अपना सम्पूर्ण अधिकार चाहता है। अमि के प्रति मम्मी का प्रेम प्रदर्षन बंटी के मन में ईर्ष्या एवं प्रतिहिंसा के भाव को जन्म देता है।

आधुनिक अभिजात्य समाज में अति यथार्थ की विरूपता के कारण तलाक जैसी मजबूरियाँ सामने आती हैं। ऐसे समय में बच्चों की स्थिति बड़ी दयनीय एवं डाँवाडोल हो जाती है। कभी–कभी उनका सम्पूर्ण भविष्य ही दाँव पर लग जाता है। बंटी ऐसे बच्चों का प्रतिनिधित्व करता है, जिनकी स्थिति तलाक के उपरान्त अपना नया विवाहित जीवन प्रारंभ करते हुए माता–पिता के मध्य त्रिषंकु जैसी हो जाती है। प्रायः ऐसे बच्चों का जीवन निरर्थक हो जाता है। समग्र उपन्यास में बंटी का अन्तर्द्वन्द्व एवं वैचारिक संघर्ष आदि का यथार्थ चित्रण पाठक को सोचने के लिए विवष कर देता है।

सम्पूर्ण उपन्यास में बाल–मनोविज्ञान का चित्रण इतना सहज रूप से हुआ है कि कहीं पर भी आरोपित सा नहीं लगता। अति यथार्थ परक मानवीय रिष्तों और सामाजिक उलझनों के बीच उलझे मानस का चित्रांकन ही लेखिका का अभिप्रेत है। मन्नू भंडारी की सबसे बड़ी उपलब्धि यही है कि वे बालमनोविज्ञान की पारखी हैं। प्रस्तुत उपन्यास में एक जगह शकुन कहती है – 'बच्चों का मन, अहं... कितना छोटा और कितना निरीह होता है सब कुछ। फिर बंटी जो छाया की तरह चिपककर रहा है उसके साथ।''

अपनी उम्र से आगे सोचने वाला बंटी, फूफी को विज्ञान की बातें समझाने वाला बंटी स्कूल की प्रवेष परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हो पाता है। माता–पिता के अलगाव के परिणाम स्वरूप मानसिक तनाव से एक स्वस्थ बच्चे की हालत कैसी हो जाती है इसका यथार्थ चित्रण बंटी के चरित्र में पाया जाता है। इस उपन्यास की कथावस्तु का सृजन करते समय लेखिका ने अपने विलक्षण ज्ञान एवं बाल मनोविज्ञान की सफल ज्ञाता होने का परिचय दिया है। बच्चों में हीनता की वृत्ति का जन्म, असंतोषी एवं विद्रोही बनकर टूटते–बिखरते परिवार से अलग हो जाना आदि प्रष्नों को मन्नू भंडारी ने गहन चिन्तन के साथ प्रस्तुत किया है। इस वृत्ति को हम कालजयी रचना कहें तो अनुचित न होगा। अतः कहा जा सकता है कि मन्नू भंडारी के उपन्यासों में बाल मनोविज्ञान का सुन्दर चित्रण हुआ है।

पाद–टिप्पणी

1. डॉ0 धनराज मानधाने, हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास, पृ. 46
2. डॉ0 विमल सहस्रबुद्धे, हिन्दी उपन्यासों में नारी का मनोवैज्ञानिक विष्लेषण, पृ. 166
3. डॉ0 गुरुदयाल बजाज, साहित्य मनोविज्ञान और हिन्दी एकांकी, पृ.33
4. डॉ0 मिथलेष रोहतगी, हिन्दी की नई कहानी का मनोवैज्ञानिक अध्ययन, पृ. 145–146
5. मन्नू भण्डारी, आपका बंटी, पृ. 12
6. मन्नू भण्डारी, आपका बंटी, पृ. 40
7. मन्नू भण्डारी, आपका बंटी, पृ. 15